E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

डॉ. हंसादीप की कथाओं में स्त्री-विमर्श के मुखर स्वरः एक विश्लेषणात्मक "अध्ययन"

डॉ. वंदना चराटे

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

भेरूलाल पाटीदार शासकीय महाविद्यालय

महु (म.प्र.)

रविन्द्र कुमार गढ़वाल शोधार्थी (पीएच.डी.)

Paper Rcevied date

05/12/2025

Paper date Publishing Date

10/12/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.18087353

सारांश

हिन्दी साहित्य में स्त्री-विमर्श समकालीन समय का सर्वाधिक चर्चित विमर्श है। स्त्री की स्थिति, उसकी पहचान, स्वाधीनता संघर्ष, देर - राजनीति, घरेलू हिंसा, पितृसत्ता और अस्तित्व चेतना जैसे प्रश्न आज के साहित्य के केन्द्र में हैं। डॉ. हंसादीप की कथाएँ स्त्री जीवन की इन्हीं बहुआयामी वास्तविकताओं को अत्यन्त संवेदनशील, यथार्थपरक और प्रतिरोधी स्वर में अभिव्यक्त करती हैं। उनके कथा साहित्य में स्त्री केवल उत्पीड़ित ही नहीं बल्कि प्रतिरोध करती हुई, विकल्प तलाशती हुई और अपनी स्वतंत्र पहचान गढ़ती हुई दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में डॉ. हंसादीप की प्रमुख कहानियों (चयनित) के आधार पर स्त्री-विमर्श के मुखर स्वरों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। शोध द्वारा निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि डॉ. हंसादीप की कथाओं में स्त्री-विमर्श एक अत्यन्त मजबूत, संवदेनशील और प्रतिरोधी रूप में उपस्थित है। उनकी कथाएँ न केवल स्त्री जीवन की पीड़ा को उजागर करती है वरन् उनके संकल्प, संघर्ष और आत्मनिर्भरता की चेतना को भी सामने लाती हैं।

बीज शब्द :-स्त्री-विमर्श, पितृसत्ता, देह - राजनीति, मानसिक शोषण, प्रतिरोध ।

प्रस्तावना :-

भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति सदियों से पुरूष प्रधान समाज द्वारा निर्धारित की गई है। साहित्य इस स्थिति को चुनौती देने, प्रश्नांकित करने और परिवर्तन की चेतना जगाने का महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। हिन्दी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कथा साहित्य में सौंदर्यबोध, करूणा और त्याग से बढ़कर स्त्री के स्वत्व, अधिकार, अस्मिता और विद्रोह की आवाजें मुखर हुई हैं।

डॉ. हंसादीप समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्य की कथाकार हैं, जिनकी रचनाओं में स्त्री की पीड़ा नहीं बल्कि उसका संघर्ष और प्रतिरोध केन्द्र में है। वे उन अनकहे और अनदेखे अनुभवों को उजागर करती है, जो घर की चुप्पियों और समाज की चोरी-छुपी संरचनाओं में केन्द्र रहते हैं।

शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये

1. डॉ. हंसादीप की चयनित कहानियों में स्त्री-विमर्श के प्रमुख स्वर पहचानना ।
2. उनकी चयनित कहानियों में स्त्री के संघर्ष, प्रतिरोध और अस्मिता का विश्लेषण करना।
3. पितृसत्तात्मक संरचनाओं के विरूद्ध स्त्री पात्रों की चेतना और सक्रियता को रेखांकित करना।
4. स्त्री-पुरूष सम्बन्धों, देह - राजनीति तथा मानसिक शोषण के यथार्थ को समझना।
5. डॉ. हंसादीप के कथा साहित्य को व्यापक स्त्री-विमर्श के संदर्भ में स्थापित करना।

संदर्भित साहित्य का अध्ययन :- पूर्व में किये गये इस विषय पर शोधों का वर्णन निम्नांकित हैं ।

1. गिरकर, दीपक : डॉ. हंसादीप के कथा साहित्य में सामाजिक वैयक्तिक, मानव संवदेना एवं नारी नियति का यथार्थ चित्रण (शोध आलेख) में कथित है कि हंसा जी की कहानयाँ विभिन्न सामाजिक और व्यक्तिगत परिस्थितियों के संदर्भ में भारतीय नारी की नियति को दर्शाती हैं। उन्होंने परिवार और समाज में नारी के समग्र तस्वीर को एक अलग आयाम दिया है। महिलाओं के मानस के व्यक्तित्व को पंगु बनाने वाले भेदभावपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों, दृष्टिकोण और व्यवहार को उनकी कहानियों और उपन्यासों में उजागर किया गया है। इनके कथा साहित्य में सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना एवं नारी नियति का यथार्थ चित्रण उभर कर सामने आता है ।" (1)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2. समीक्षा मधु संधु, प्रवासी साहित्य हंसादीप का कहानी साहित्य, पाण्डे नूतन, पाण्डेय दीपक (पुस्तकः 7 कहानी संग्रहों में प्रकाशित कहानियों पर 16 शोध आलेख) इनमें विभिन्न शोध आलेख प्रस्तुत किये गये हैं।

   https://www.retang.com, डॉ. हंसादीप के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना मानवीय संवेदना एवं नारी नियति का यथार्थ चित्रण, ISSN : 2475-1359, पिटर्स बर्ग अमेरिका से प्रकाशित, सेतु अगस्त 2024

- डॉ. हंसादीप की कथा दृष्टि :-डॉ. हंसादीप की कथादृष्टि में स्त्री न तो आदर्शवादी देवी है और न ही मात्र पीड़िता - वह एक विचारशील मनुष्य है, जो अपनी स्थिति को समझती है और आवश्यक होने पर उसका प्रतिरोध भी करती है। यही दृष्टि उनके साहित्य को स्त्री-विमर्श के संदर्भ में विशेष महत्व प्रदान करती है। स्त्री-विमर्श के स्वर को मुखर करती उनकी कुछ चयनित कहानियों का विश्लेषण इस प्रकार है।-

  1. उसकी औकात :- इस कहानी में शिक्षा जगत के उस कड़वे सच की कथा है, जहाँ 'हैली जैसी लोकप्रिय युवा अध्यापिका के खिलाफ विभागाध्यक्ष मोर्चा खोल लेते हैं । हैली का आत्मविश्वास और ज्ञान सबको चुभ रहा था, तो उसके गुण, अवगुण की सूची में डाले जाते हैं, समूचा विभाग एक ओर, मिस हैली दूसरी ओर जंग शुरू हो गई। कुर्सी अकेली नहीं होती, उसके चार पैर होते हैं, हत्थे, मजबूत पीठ भी, हैली कुर्सी की ताकत को पहचानती थी, लेकिन यह भी जानती थी कि हिम्मत की आवश्यकता है, किसी डर कर नहीं। एक चीटीं ने हाथी से टक्कर ली थी। जीत हैली की हुई तो अपमानित विभागाध्यक्ष का तजुर्क कहता था कि कहीं न कहीं तो इस हार का बदला लेंगे। लेकिन फिर उन्हें मुंह की खानी पड़ी थी, उनकी मेज पर मिस हैली का त्याग पत्र रखा था। वह जीतकर, नौकरी छोड़कर जा रही थी । इस कहानी में स्त्री-विमर्श का स्वर इस प्रकार से मुखर है। यहाँ नौकरी में संघर्ष, सहयोगी को नीचा दिखाने की इच्छा, यहाँ मानवीय मूल्य शून्य होने पर भी नायिका का आत्मबल,आत्मविश्वास कम नहीं होता, उसकी जीत फिर त्यागपत्र, स्त्री की मजबूती दर्शाते हैं।
  2. पन्ने जो नहीं पढ़े :- इस कहानी में दो स्त्रियों को अलग-अलग रूप में दिखाया है। इनमें निम्मी जो एक भारतीय नारी के संस्कारों से आभूषित है। पति अध्यापक है, यह सर्व

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सामान्य बात है, प्राध्यापक में ज्ञान और संस्कृति का समन्वय होता है। प्रोफेसर को उनके पास आने वाले छात्रों के साथ पत्नी भी सर कह कर बुलाती है । रश्मि जो विनम्र और सुंदर छात्रा है, ज्ञान पिपासा की पूर्ति हेतु सर के पास आती रहती है। उसकी माँ नहीं है, पिता कारोबार के कारण अधिकतर शहर के बाहर रहते हैं, अटूट विश्वास से बेटी को निम्मी के घर छोड़कर जाते हैं, ताकि बेटी का अभ्यास बर्बाद न हो ।

एक रात्रि को निम्मी अचानक प्यास लगने पर पानी के लिये आती है तो क्या देखती है कि रश्मि और सर अप्राकृत अवस्था में साथ हैं, तो निम्मी का मोहभंग हो जाता है। अपने बेटे के लिये रश्मि को बहू बनाने का जो सपना था, वह चूर-चूर हो जाता है। बेटा विदेश चला जाता है और किसी विदेशी मेम से शादी रचा लेता है। मोहभंग के बाद निम्मी 'सर' से अलग गाँव में रहकर अपना जीवन बसर करती है। रश्मि भी सर को गुरू दक्षिणा देकर अपनी राह पकड़ लेती है। निम्मी को जब पता चलता है, तो वह कहती है –" 'सर' ने वाकई में वह पन्ने नहीं पढ़े, जो जीवन के सार्थक पलों को पाते हैं ।" इस कहानी में नायिका निम्मी कोई लड़ाई-झगड़ा, तूफान खड़ा नहीं करती, चुपचाप 'सर' को छोड़कर गाँव चली जाती है, स्त्री-विमर्श का यहाँ एक मौन प्रतिरोध का स्वर मुखरित हुआ है।

3. पाँचवी दीवार : - इस कहानी में पाँचवी दीवार सुमन रूपी है, जो राजनीतिक पार्टी को जीताकर सर्वेसर्वा हासिल करना चाहती है, वह शिक्षिका है और विद्यालय की भाँति यहाँ भी अनुशासन एवं नियंत्रण करके देश को सुचारू रूप से गठित करने का उसका सपना है। इस प्रकार पाँचवी दीवार के रूप में वह सशक्त बनना चाहती है। इस कहानी में समता-सुमन आशावान है और दृढ़ भी । इस कहानी में स्त्री-विमर्श के स्वर घर-परिवार के बाहर राजनीतिक क्षेत्र में मुखर है।
4. एक मर्द एक औरत :- इस कहानी में हंसा जी ने समाज की भयावह त्रासदी को रेखांकित करती, पारिवारिक आंतरिक रिश्तों की पवित्रता पर अंगुली उठाते समाज की सोच और कुंठा पर प्रहार किया है। दो रिश्तों की पवित्रता का निर्णय कैसे कोई तीसरा आदमी कर सकता है ? यहाँ भी हंसा जी स्त्री-विमर्श में पवित्रता के स्वर को मुखर करती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इसी क्रम में खिलखिलाती छूप और 'हाशिये से बाहर' दोनों कहानियों को बुनने में हंसा जी ने नारी - मन को खूब उड़ान दी है। इसी संदर्भ में 'शून्य के भीतर' कहानी का उल्लेख भी आवश्यक है। यह कहानी श्रीलंका की कौमुरी से कुमुडी बनी महिला की मार्मिक कहानी है, जिसमें दिखाया गया है कि कुमुडी अस्पताल में नौकरी करते हुये अपने कन्धों की क्षमता से बेखबर वह एक के बाद एक जिम्मेदारी लेती रहती है। अपने भाई-बहनों का पालन-पोषण करती है, उन्हें लायक बनाती है। बड़े होने पर सब भाई - बहन अपने रास्ते चले जाते हैं, रह जाती है अकेली कुमुडी । उसकी दुनिया शून्य हो चुकी है, वह अपने एकाकीपने को दूर करने के लिये गिलहरी, बिल्ली आदि जानवरों को अपना साथ बना लेती है। मरने के बाद भी वह जानवरों से बोलती रहती है फोटो में कैद होकर। इस कहानी में हंसा जी ने कुमुडी के पशु प्रेम से एकाकीपन का हल मुखर किया है। अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है।

डॉ. हंसादीप की कहानियों में स्त्री अपने अस्तित्व को लेकर सजग दिखाई देती है। वह केवल पत्नी, माँ या बेटी की पारम्परिक भूमिकाओं में सीमित नहीं रहना चाहती बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में पहचाने जाने की आकांक्षा रखती है। उनके स्त्री पात्र अपने भीतर यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या मेरा मूल्य केवल रिश्तों से तय होगा या मेरी अपनी पहचान भी है। यही आत्मबोध स्त्री-विमर्श की आधारशिला है। डॉ. हंसादीप की कथाओं में पितृसत्ता कोई अमूर्त अवधारणा के रूप में नहीं मिलती है, बल्कि रोजमर्रा के जीवन में मौजूद व्यावहारिक सत्ता है जैसे पुरूष का निर्णयकर्ता होना, स्त्री की चुप्पी को उसका कर्तव्य मान लेना, घरेलू श्रम को महत्व न देना आदि। इन स्थितियों के प्रति उनके स्त्री पात्र मौन स्वीकृति नहीं दिखाते, वे प्रश्न करते हैं, असहमति दर्ज करते हैं और कई बार मानसिक स्तर पर विद्रोह भी उनके स्त्री पात्र करते हैं । यह प्रतिरोध कभी खुला होता है तो कभी भीतर-ही-भीतर पनपते हुए विस्फोटक हो जाता है।

स्त्री-विमर्श के मुखर स्वर हंसा जी की कथाओं में घरेलू जीवन के यथार्थ को उजागर करते हुए उनके स्त्री पात्र, जिनके त्याग को स्वाभाविक व अनिवार्य मान लिया जाता है, वे अपने घर-परिवार, दफ्तर, राह, व अन्य स्थानों पर भावनात्मक उपेक्षा, संवादहीनता, मानसिक दबाव, निरन्तर जिम्मेदारियों के बोझ से जूझते हुए दिखाई देते हैं। उनकी पीड़ा अक्सर दिखाई देती हैं, परन्तु हंसा जी उसे शब्द देकर भावों की लड़ी में गूंथकर समाज के सामने लाती हैं, यही उनके स्त्री-विमर्श का संवदेनशील पक्ष है। उनकी 'पति परमेश्वर' कहानी के कुछ वाक्य - "उसकी पीली-पीली में आँसूं", स्त्री जीवन का ऊहापोह कि एक ओर तो वह अपने शराबी पति के

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अत्याचारों से तंग आकर उसके मर जाने की इच्छा रखती है – "मैंने तो कहती हूँ कि यह मर जाये तो अच्छा रहे। दारू पीता है फिर भी मरता नहीं।" वहीं दूसरे ओर उसके लिये मिठाई' ले जाना चाहती है 'मेरा मन नहीं मानता बाई सा, मिठाई देख के खुश तो होगा थोड़ा । बिचारे को कहाँ खाने को मिलती है।" इस प्रकार हंसा जी प्रत्येक पक्ष से स्त्री के मनोभावों को प्रभावी रूप से व्यक्त करती हैं।

लेखिका की कथाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि शोषण केवल शारीरिक ही नहीं होता, व्यंग्य, उपेक्षा, निर्णयों से वंचित रखता, भावनाओं को महत्व न देना ये सभी मानसिक हिंसा के रूप हैं। उनके सत्री पात्र हिंसा को पहचानने व भोगते नजर आते हैं, वे उनके प्रभाव को भी समझती हैं, यही समझ आगे चलकर अपने प्रतिरोध के स्वर मुखर करती है और यही स्त्री - विमर्श है। हंसादीप की कथाओं में आर्थिक पक्ष भी स्त्री-विमर्श का महत्वपूर्ण आयाम बताया गया है। स्त्री की आर्थिक निर्भरता को उसकी असुरक्षा का कारण माना गया है, क्योंकि आर्थिक आत्मनिर्भरता को आत्मसम्मान और स्वतंत्र निर्णय लेने की कुंजी माना जाता है। डॉ. हंसादीप के कथाओं की स्त्रियाँ आर्थिक स्वावलंबन को केवल पैसे कमाने का साधन नहीं, बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व की नींव मानती है। वे अपनी कथाओं में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों को भी स्त्री - दृष्टि से पुनर्परिभाषित करती हैं, उनकी कथाओं में विवाह एक पवित्र सम्बन्ध से अधिक एक व्यावहारिक सम्बन्ध है। इसमें प्रेम में समानता और सम्मान की अपेक्षा होती है । मातृत्व भी स्त्री की एक पहचान है, सम्पूर्णता नहीं । यह दृष्टि स्त्री का भावनात्मक गुलामी से मुक्त करने की दिशा में एक मार्गदर्शन है।

डॉ. हंसादीप की कहानियों में स्त्री अक्सर मौन से शुरूआत करती है, पर अंततः उसकी चेतना मुखर होती है। यह मुखरता हमेशा विद्रोह के नारे नहीं लगाती बल्कि स्वयं के लिये निर्णय लेने, अन्याय को पहचानने, आत्मसम्मान को प्राथमिकता देने के रूप में प्रकट होती है। यही स्त्री-विमर्श का आधुनिक व परिपक्व स्वर है। डॉ. हंसादीप की चयनित कथाओं के विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ इनका स्त्री-विमर्श अत्यधिक यथार्थपरक है, इनमें भावुकता का अतिरेक नहीं है, मनोवैज्ञानिक गहराई से स्त्री-विमर्श को दर्शाया गया है, प्रतिरोध विद्रोह के रूप में न होकर संतुलित है, स्त्री को अबला न दर्शाकर कर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

डॉ. हंसादीप की कथाओं में स्त्री-विमर्श एक सजग, संतुलित और यथार्थपरक चेतना के रूप में उभरता है । उनेक स्त्री-प - पात्र न तो निरीह है और न ही अतिवादी विद्रोही। वे परिस्थितियों को समझते हैं, अपने भीतर

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बदलाव लाते हैं और आवश्यक होने पर सामाजिक ढाँचे को चुनौती देते हैं इस प्रकार हंसदीप का कथा-साहित्य समकालीन हिन्दी कथा - साहित्य में स्त्री - विमर्श को नई भाषा, नई संवेदना और नई दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. दीप, हंसा, चश्मे अपने-अपने, डायनेमिक पब्लिकेशन (इंडया) लि.
2. दीप, हंसा, प्रवास अपने-अपने, डायनेमिक पब्लिकेशन (इंडया) लि.
3. प, हंसा, काँच के घर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. दीप, हंसा, शत-प्रतिशत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. दीप, हंसा, उम्र के शिखर पर खड़े लोग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. पाण्डेय, नूतन एवं पाण्डेय, दीपक, साहित्यकार हंसादीप का कहानी साहित्य